पुर्तगाली युद्धपोत एक प्राणी है

डॉ. चन्द्रशीला गुप्ता

पुर्तगाली युद्धपोत शब्द सुनकर दिमाग में पुर्तगाल के किसी प्राचीन लड़ाकू जहाज का ही ख्याल आता है किन्तु यह एक निम्न श्रेणी का प्राणी है, जो अपनी विषैली दंश-कोशिकाओं से समुद्री गोताखोरों को भारी हानि पहुंचाता है। यही वजह है कि इसका नाम पुर्तगाली युद्धपोत पड़ा।

इसका वैज्ञानिक नाम *फायसेलिया* है जिसे संघ सिलेन्ट्रेटा के वर्ग हाइड्रोज़ोआ में रखा गया है। यह जन्तु अपने चारों ओर नीचे लटकते लम्बे-लम्बे स्पर्शकों से भयंकर पीड़ा उत्पन्न करता है। इन स्पर्शकों पर विषैली दंश कोशिकाएं स्थित होती है जो फूटकर प्रोटीन प्रकृति का एक ज़हरीला चिपचिपा द्रव बाहर छोड़ती हैं। यह तेज़ पीड़ा पैदा करता है। कोशिकाओं को द्रव छोड़ने का उद्दीपन तंत्रिका तंत्र से नहीं मिलता बल्कि परिवेश से मिलता है। इन कोशिकाओं में बाहर दंश प्रवर्ध निकला होता है जो रासायनिक उद्दीपनों से उत्तेजित होता है जिससे कोशिका का ढक्कन खुल जाता है। कोशिका के अंदर से चिपचिपे सर्पिल सूत्र बाहर निकल आते हैं, ये पानी के सम्पर्क में आकर फूल जाते हैं।

एक बार बाहर निकलने पर दंश-कोशिका पुनः अंदर नहीं लाई जाती वरन् त्याग दी जाती है क्योंकि यह एक बार ही उपयोग में लाई जा सकती है। इसका स्थान दूसरी दंश कोशिका ले लेती है।

दंश कोशिका से निकलने वाला पदार्थ अपने शिकार को अशक्त कर देता है। यह मनुष्य की त्वचा पर जलन पैदा करता है। इस विष को थेलेसिन नाम दिया गया है। प्रयोगशाला में छोटे कशेरुकी प्राणियों को *फायसेलिया* के सूखे स्पर्शक खिलाने पर उनकी मृत्यु होते देखी गई है। अन्य जन्तुओं में पहले नींद पैदा होती है, फिर संवेदनहीनता और अन्त में मृत्यु भी हो जाती है।

इसके विपरीत एक छोटी मछली *नोमियर्स* इसके साथ ही तैरती हुई बिना प्रभावित हुए चलती है। होता यह है कि यह *फायसेलिया* के स्पर्शको का भक्षण करती है जिससे विष के प्रति प्रतिरोध पैदा हो जाता है अतः इस पर दंश कोशिकाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रारम्भ में वैज्ञानिकों ने इसे सहभोजी माना था।

फायसेलिया एक बहुरूपी चमकदार प्राणी है। इसकी पूरी कालोनी एक विशाल घण्टाकार फ्लोट या न्यूमेटोफोर के सहारे तैरती रहती है। इसमें वायु के समान संघटन वाली एक गैस भरी रहती है जो इसी में स्थित गैस ग्रन्थि द्वारा स्रावित होती है। इस बहुरूपी कालोनी में पोषक एवं जनन जीवक पाए जाते हैं जो चारों ओर से लम्बे लम्बे स्पर्शकों (रक्षक जीवक) से घिरे रहते हैं। कुछ विशाल प्रजातियों में ये 60 फीट तक लम्बे देखे गये हैं।

फायसेलिया के द्वारा भयंकर पीड़ादायक घाव करने व इसका फ्लोट नेपोलियन के टोप जैसा दिखने के कारण इसे पोर्तगीज मेन ऑफ वार कहा जाता है। ***(स्रोत फीचर्स)***